मसीही चरित्र

मसीही चरित्र: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. मसीही चरित्र का परिचय।

II. सेवा।

कक्षा #२:

III. नम्रता (मूसा के जीवन का एक अध्ययन)।

कक्षा #३:

IV. अगुवाई (नहेम्याह के जीवन का एक अध्ययन)।

कक्षा #४:

IV. अगुवाई (जारी।)

नहेम्याह से अगुवाई की चरित्र विशेषता का परिशिष्ट।

V. निस्वार्थता की चरित्र विशेषता (असीसी के फ्रांसिस का जीवन)।

कक्षा #५:

VI. अनुशासन (जॉन वेस्ली का जीवन)। परीक्षा।

मसीही चरित्र

टिप्पणियाँ -

मसीही चरित्र: परीक्षा

संभावित २० बिंदु प्रश्न

१) दास होने और केवल सेवा करने के बीच अंतर का वर्णन करें (पृष्ठ ६-८)।

२) नम्रता के स्वभाव के दो महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर चर्चा करें (पृष्ठ ११-१३)।

३) मूसा ने स्वयं से कैसे दूर देखा इस संदर्भ में नम्रता पर चर्चा करें (पृष्ठ १८-१९)।

४) तीन तरीकों पर चर्चा करें जिससे अगुवे नहेम्याह ने अपने लोगों को प्रोत्साहित किया (पृष्ठ २९-३१)।

५) चर्चा करें कि कैसे अगुवे नहेम्याह ने विरोध का प्रत्युत्तर दिया और प्रबंधन किया (पृष्ठ ३१, ३२)।

६) वर्णन करें कि किस प्रकार स्वंतत्रता और आनंद उस निःस्वार्थ जीवन के परिणाम थे जिसका नेतृत्व असीसी के फ्रांसिस ने किया (पृष्ठ ३६, ३७)।

संभावित १० बिंदु प्रश्न

१) ''पैर धोने'' की संस्कृति का संक्षिप्त विवरण प्रदान करें (पृष्ठ ४)।

२) दिखाएँ कि कैसे ''दीन-हीन'' प्रकार की सेवा करने से इंकार करना मूर्तिपूजा है (पृष्ठ ५-६)।

३) झूठी नम्रता क्या है (पृष्ठ १०, ११)?

४) प्रार्थना और नम्रता एक दूसरे से कैसे जुड़े हैं (पृष्ठ १३)?

५) नहेम्याह की पुस्तक के ऐतिहासिक संदर्भ का संक्षेप में वर्णन करें (पृष्ठ २२)।

६) दिखाएं कि कैसे नहेम्याह का परमेश्वर में स्वभाविक आत्मविश्वास/भरोसा था (पृष्ठ २३)।

७) वर्णन करें कि नहेम्याह अधिकार और जिम्मेदारी के बीच असंतुलन की समस्या से कैसे बचे (पृष्ठ २८)।

८) नहेम्याह की दूसरों को प्रेरित करने की प्रक्रिया का वर्णन करें (पृष्ठ २९)।

९) एक तरीका दर्शाएं जिसमें नहेम्याह ने आत्म-बलिदान के मार्ग का नेतृत्व किया (पृष्ठ ३३)।

१०) नहेम्याह की चरित्र विशेषताओं में से किसी एक का नाम बताएं (परिशिष्ट देखें) और संदर्भ प्रदान करें (पृष्ठ ३५)।

११) निस्वार्थता के विचार को परिभाषित करें (पृष्ठ ३६)।

१२) अनुशासन और कर्मकाण्डवाद के बीच अंतर का संक्षिप्त विवरण दें (पृष्ठ ३९)।

मसीही चरित्र

टिप्पणियाँ -

I. मसीही चरित्र का परिचय।

क. चरित्रः आप कौन हैं और क्या करते हैं कि वास्तविकता।

१. चरित्र एक ऐसा शब्द है जो ''व्यक्तित्व'' और ''रूप-रंग'' से परे है। चरित्र वह है जो आप हैं। यह ''रूप-रंग'' के पीछे की वास्तविकता है। यह व्यक्तित्व के सामने की वास्तविकता है।

२. यह कहा गया हैः

आपका आदर्श वही है जो आप चाहते हैं कि आप होते।
आपकी प्रतिष्ठा वही है जो लोग कहते हैं कि आप हैं।
आपका चरित्र वही है जो आप वास्तव में हैं।

३. हमारा चरित्र हमारे जीवन की दिशा को बनाता हैं। यह भी कहा गया है किः

यदि हम एक विचार बोते हैं, तो हम एक क्रिया काटते हैं।
यदि हम एक क्रिया बोते हैं, तो हम एक आदत काटते हैं।
यदि हम एक आदत बोते हैं, तो हम एक चरित्र काटते हैं।
यदि हम चरित्र बोते हैं, तो हम एक मंजिल काटते हैं।

ख. इस पाठ्यक्रम की सामग्री।

१. यह पाठ्यक्रम मसीही चरित्र के कुछ सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन करता है। इस अध्ययन के माध्यम से, हम और अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे कि एक मसीही क्या है और एक मसीही क्या करता है।

२. निम्नलिखित चरित्र विशेषताओं का अध्ययन किया जाएगाः

क. सेवा (यीशु और चेलों के एक अध्ययन के माध्यम से)।

ख. नम्रता (मूसा के एक अध्ययन के माध्यम से)।

ग. अगुवाई (नहेम्याह के एक अध्ययन के माध्यम से)।

घ. निःस्वार्थता (असीसी के फ्रंसिस के एक अध्ययन के माध्यम से)।

ङ. अनुशासन (जॉन वेस्ली के एक अध्ययन के माध्यम से)।

टिप्पणियाँ -

II. सेवा।

क. यूहन्ना १३ अध्याय में यीशु ने चेलों के पैरों को धोने के द्वारा मसीही सेवा के मानकों को स्थापित किया।

१. यूहन्ना १३ अध्याय की सांस्कृतिक पृष्ठभूमिः पैर धोना अब्राहम के समय से ही मध्य पूर्व में एक सामान्य रिवाज था (उत्पत्ति १८:४; १९:२)।

क. उस क्षेत्र की शुष्क जलवायु ने कच्ची सड़कों को बहुत धूल-धूसरित कर दिया था। लोग यात्रा करते समय अपने पैरों में खुली जुतियाँ पहनते थे। इस प्रकार, पैर धोना एक व्यावहारिक सेवा थी।

ख. साथ ही पैर धोना इब्री संस्कृति में सेवा का सबसे निचला रूप था।

१) यहाँ तक कि इब्री लोग अपने इब्री सेवकों को भी यह करने की अनुमति नहीं देते थे। वे अपने सबसे निचले अन्यजातीय सेवकों से अतिथियों के पैर धुलवाते थे।

२) इसका एक मात्र अपवाद यह था कि जब कोई चेला अपने गुरू के प्रति अपनी वफादरी के प्रदर्शन के रूप में उसके पैर धोता था।

२. यीशु ने कैसे मसीह सेवा का एक नया मानक स्थापित किया?

क. यूहन्ना १३ में, गुरू कौन था, जिसने अपने चेलों के पैर धोए। संदेश स्पष्ट है।

१) तुम अगुवे के रूप में मेरी स्थिति के कारण मेरी सेवा करते हो (पद १३)।

२) इसके बजाए, मैं तुम्हारी सेवा करता हूँ (पद १४)।

३) इसलिए, तुम्हें कम से कम एक दूसरे की सेवा करने के लिए इच्छुक होना चाहिए (पद १४ ख, १५)।

क) हमें दूसरों की सेवा करने के लिए इच्छुक होना चाहिए क्योंकि जो हमसे बड़ा है वह अपने पूरे जीवन को हमारे लिए एक सेवा बनाने के लिए तैयार था।

टिप्पणियाँ -

ख) विशेष रूप से, जब हम अपनी तुलना यीशु से करते हैं और यह महसूस करते हैं कि हमारी स्थिति उनके अनुरूप है, तो हम यह कहने का प्रयास नहीं करेंगे कि हमारे पास कुछ विशेष अधिकार हैं और हमें सेवा के कुछ निश्चित रूपों को करने की आवश्यकता नहीं है।

(१) जब हम सेवा करने से मना करते हैं क्योंकि यह बहुत ''छोटा कार्य'' है, तो हम अपने आप को यीशु से ऊँचा करने का प्रयास करते हैं जिन्होंने अपने दिनों के सेवा के सबसे छोटे कार्य को किया। जब हम ऐसा करते हैं जो हम मूर्तिपूजा करते हैं।

(२) प्रतीकात्मक रूप से सेवा का सबसे छोटा काम करने के द्वारा यीशु ने, एक इतना नीचा मानक स्थापित किया कि हमारा अभिमान हमें किसी भी सेवा से दूर नहीं रख सकता, जो किसी कि सहायता करती है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कितना ''छोटा'' दिखाई देता है।

लेखक का उदाहरण:

पासबानों को यह नहीं कहना चाहिए कि उन्हें कलीसिया में छोटे-मोटे काम नहीं करने चाहिए क्योंकि उनके पास बाइबल प्रशिक्षण है।

उसी प्रकार, मसीही पेशेवरों को कलीसिया के शौचालयों को साफ करने से सिर्फ इसलिये इंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि यह सेवा का एक ''बहुत तुच्छ'' काम है।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

अब इस अवधारणा पर चर्चा करने और इसका अनुप्रयोग करने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

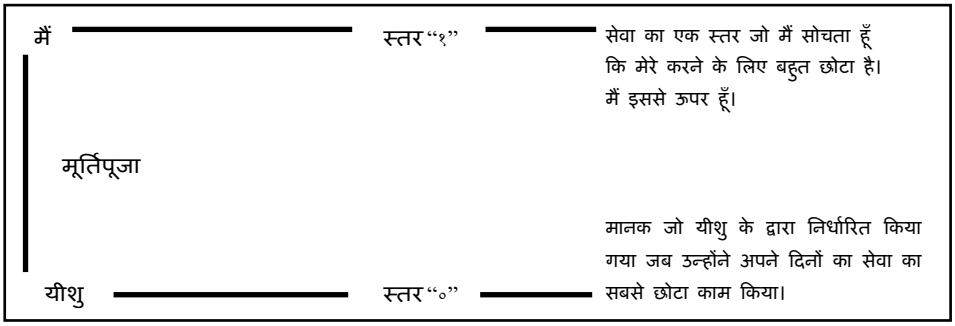

याद रखें जब सेवा का एक काम मुझसे नीचा होता है, तो मैं यीशु को अपने नीचे रखता हूँ क्योंकि मैं कहता हूँ कि मुझे वह करने की जरूरत नहीं जो यीशु ने किया। यह मुझे उनसे ऊपर रखता है। यह मूर्तिपूजा है।

ख. किसी सेवा करने वाले और किसी दास के बीच अन्तर है।

१. वास्तविक सेवा और वास्तविक प्रेम।

क. सेवा करने के बारे में अपने चलों को एक स्पष्ट संदेश देने के बाद (उपरोक्त संदर्भित), यीशु ने उनसे कहा कि उन्हें उसके द्वारा संसार में भेजा जाएगा (यूहन्ना १३:१६)।

१) हमें यीशु के चेले होने के लिए भेजा गया है। हमें उनकी सेवा की भावना को साझा करना चाहिए और जीवन के उस तरीके को स्वीकार करना चाहिए जो उस तरीके के अनुरूप है जो उन्होंने अपने लिए चुना।

२) हमें याद रखना चाहिए कि यीशु ने केवल परम सेवा ही प्रदान नहीं की। वे परम दास बन गए।

३) इस प्रकार, हमें केवल सेवा के काम ही नहीं करने चाहिए। हमें दास होना चाहिए।

ख. हम देख सकते हैं कि वास्तविक सेवा वास्तविक प्रेम का परिणाम है।

१) जो सेवा के काम करता हो वह उन्हें छिपे हुए उद्देश्यों से कर सकता है। जो दास है वह सेवा के कार्यों को शुद्ध उद्देश्यों से करता है।

२) MOTMOT अर्थात मोटमोट पाठ्यक्रम विवाह में, दो प्रकार के प्रेम की तुलना की गई है।

टिप्पणियाँ -

क) सांसारिक प्रेम को "५०/५०" प्रेम कहा गया है। इसका अर्थ है प्रत्येक साथी अपना आधा भाग, या विवाह में अपना ५०: प्रयास देता है। प्रत्येक व्यक्ति इस अपेक्षा से देता है कि दूसरा व्यक्ति बराबर भाग देगा।

ख) "अगापे" प्रेम बिना शर्त का प्रेम है या "१००/१००" प्रेम है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक साथी अपने आप का सारा भाग, या विवाह में अपना १००% प्रयास देता है। प्रत्येक साथी बदले में कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा के बिना दूसरे साथी की सहायता करता है, चाहे देना उनके अपने खर्च पर हो या महंगा हो।

ग) प्रेम के इन्हीं प्रकारों के अनुसार "५०/५०" सेवा और "१००/१००" सेवा है।

(१) "५०/५०" सेवा एक स्वार्थी और झूठी सेवा है।
(२) "१००/१००" सेवा एक निःस्वार्थ, वास्तविक सेवा है जो बिना शर्त के की जाती है।

चर्चा विषय

पिछली अवधारणा पर चर्चा करने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें:

सेवा के प्रकार	यह क्या कहता है	टिप्पणियाँ
सशर्त सेवा ५० _____ ५० देने का प्रतिशत	यदि आप सेवा करेंगे। मैं आधा करूँगा। (मैं सेवा करूँगा यदि बदले में मुझे कुछ मिलेगा।)।	*इस दर्शन में कोई वास्तविक सेवा नहीं है। आपकी आँखें दूसरे व्यक्ति पर केंद्रित हैं। आप तब ही सेवा करेंगे जब आपकी सेवा की जाएगी। दूसरा व्यक्ति आपके सेवा करने की प्रतिक्षा कर रहा है।*
बिना शर्त सेवा १०० _____ १० ० देने का प्रतिशत	इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या करते हैं, मैं सेवा करूँगा। यदि आवश्यक है तो मैं यह सब कुछ करूँगा।	*इस दर्शन में, वास्तविक, सेंत-मेंत और नियमित सेवा है। आपकी आँखें आपकी अपनी ज़िम्मेदारी पर लगी रहती है। आपकी सेवा दूसरे व्यक्ति पर निर्भर नहीं होती।*

ग. एक दास होने के लिए आपको अपनी इच्छाओं को भूलना चाहिए और दूसरों की इच्छाओं को याद रखना चाहिए।

१) साथ ही आपको दूसरों की जिम्मेदारियों को भूल कर अपनी जिम्मेदारियों को याद रखना चाहिए।

२) दूसरे शब्दों में, आपको स्वयं के लिए मर कर, परमेश्वर और दूसरों के लिए जीना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

२. सेवा करने का चुनाव और एक दास होने का चुनाव।

क. जब हम सेवा करने का चुनाव करते हैं, तो हम अक्सर इस बात के प्रभारी बने रहत हैं कि वह किसकी, कब, क्यों और कहाँ सेवा करेंगे। आवश्यकरूप से यह हमारी सेवा को सीमित करता है और साथ ही हमें दूसरों के द्वारा इस्तेमाल किए गए और हेरफेर किए गए महसूस करने को संभव बनाता है।

ख. जब हम दास होने का चुनाव करते हैं, तो हम उन कारकों के प्रभारी होने का ''अधिकार'' छोड़ देते हैं। मसीह में हमारी सेवा की कोई सीमा नहीं है और हम इस्तेमाल किए गए और हेरफेर किए गए महसूस नहीं कर सकते क्योंकि हम पहले ही अपने अधिकारों को छोड़ चुकें हैं (इस प्रकार, हेरफेर करने और उल्लंघन करने के लिए कोई अधिकार नहीं बचते)।

१) एक दास होने की मनोवृत्ति शुद्ध उद्देश्यों और मसीह में बिना शर्त की सेवा के परिणामों से उत्पन्न होती है।

२) पौलुस ने अपने आप को मसीह के दास के रूप में वर्णित किया (रोमियों १:१; फिलिप्पियों १:१; इत्यादि)। यीशु ने कहा कि दास सबसे बड़ा होगा (मत्ती २०:२७)।

क) इस प्रकार का शुद्ध दास एक गुलाम के समान अपने सभी अधिकारों को त्याग देता है।

ख) अधिकारों को पकड़े रहना और अधिकारों को छोड़ देना एक सेवा करने वाले और एक दास के बीच का अन्तर है।

चर्चा विषय

इस अवधारणा पर चर्चा करने के लिए फिलिप्पियों २:६, ७ का उपयोग करें।

ग. इन सिद्धांतों के स्पष्ट उदाहरण के रूप में यीशु ने दास के दृष्टांत का उपयोग किया जो खेत में सेवा करने बाद घर में सेवा जारी रखने के लिए आया। (पढ़ें लूका १७:७-१०)।

१) दृष्टांत में, दास के पास कोई अधिकार नहीं हैं। जब वह अपना काम करता है तो कोई अधिकार या श्रेय अर्जित नहीं करता क्योंकि वह केवल वही कर रहा है जो उससे अपेक्षा की जाती है। यीशु ने कहा कि हमें भी यही रवैया रखना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

पिछली अवधारणा पर विस्तार करने के लिए निम्मलिखित आरेख का प्रयोग करें:

सेवा का सांसारिक रवैया			सेवा का परमेश्वर के राज्य का रवैया		
दूसरों को चोट पहुंचाना	सेवा नहीं करना/ चोट नहीं पहुंचाना	दूसरों की सेवा करना	सेवा नहीं करना/ चोट नहीं पहुंचाना	दूसरों की सेवा करना	परमेश्वर का अनुग्रह
नकारात्मक स्थिति (दण्ड)	तटस्थ स्थिति (कोई प्रतिफल नहीं/ कोई दण्ड नहीं)	सकारात्मक स्थिति (प्रतिफल)	नकारात्मक स्थिति (दण्ड)	तटस्थ स्थिति (कोई प्रतिफल नहीं/ कोई दण्ड नहीं)	सकारात्मक स्थिति (प्रतिफल)

२) संसार सिखाता है कि सेवा न करना एक तटस्थ स्थिति है। परमेश्वर के राज्य में, सेवा न करने का परिणाम दंड है (तिरस्कार के पाप)। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के राज्य में सेवा करना ही तटस्थ होना है। यह एक अनुमनित दायित्व है। यह कोई प्रतिफल अर्जित नहीं करता। प्रतिफल परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है।

चर्चा विषय

सेवा करने का चुनाव करने वाले और दास होने का चुनाव करने वाले के बीच अन्तर के संबंध में हमारे पिछले विचारों को आगे बढ़ाने के लिए निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें।

एक सेवा करने वाला	एक दास
किसकी सेवा करनी है - सशर्त	कौन – (कोई भी जिसकी परमेश्वर आज्ञा देते हैं)
क्या करना है - सशर्त	क्या – (कुछ भी जो परमेश्वर आज्ञा देते हैं)
कहाँ सेवा करनी है - सशर्त	कहाँ – (कहीं भी जहाँ परमेश्वर आज्ञा देते हैं)
क्यों सेवा करनी है - सशर्त	क्यों – (क्योंकि परमेश्वर आज्ञा देते हैं)
कब सेवा करनी है - सशर्त	कब – (जब भी परमेश्वर आज्ञा देते हैं)
कैसे सेवा करनी है - सशर्त	कैसे – (जैसे परमेश्वर आज्ञा देते हैं)
यदि इन शर्तों का उल्लंघन किया जाता है तो सेवा समाप्त हो जाती है।	ऐसी कोई शर्त नहीं जिनका उल्लंघन किया जा सके और सेवा समाप्त हो जाए।
एक सेवा करने वाला सेवा का कार्य आवश्यकता के लिए करता है। यह कुछ ऐसा है जो वह करता है। कुछ ऐसा जो आप करते हैं वह समाप्त हो जाता है।	एक दास सेवा का काम इसलिए करता है क्योंकि वह सेवक है। यह कुछ ऐसा है जो वह है। आप कौन हैं इसका अंत नहीं होता।

टिप्पणियाँ -

III. नम्रता।

क. नम्रता का परिचय।

१. यीशु का पहला सार्वजनिक उपदेश (जिसे पहाड़ी उपदेश भी कहा जाता है) परमेश्वर के राज्य के लोगांे की बहुत सी चरित्र विशेषताओं के बारे में बताता है। यह काई संयोग नहीं है कि पहली विशेषता नम्रता से संबंधित है (मत्ती ५:३)।

क. कई मायनों में, बाकी सबकुछ करने की क्षमता जिस पर यीशु ने पहले उपदेश में जोर दिया था, उस मात्रा पर निर्भर करती है जिस मात्रा में यह पहली विशेषता सक्रिय होती है।

ख. नम्रता एक ऐसी मसीही चरित्र विशेषता है जो कई अन्यों के लिए द्वार खोलती है। एक ईश्वरीय चरित्र निर्माण के लिए यह एक पूर्वापेक्षा है।

२. नम्रता का अध्ययन करने के लिए हम मूसा के जीवन और चरित्र पर ध्यान केंद्रित करेंगे। बाइबल कहती है कि वह पृथ्वी पर सबसे नम्र व्यक्ति थे (गिनती १२:३)। इस प्रकार, उनके जीवन का एक अध्ययन हमें एक अच्छी रूपरेखा प्रदान करता है जो ''नम्रता'' को समझने में हमारी सहायता करती है।

३. रूपरेखा में तीन मुख्य बिंदु शामिल हैंः

क. नम्रता का स्वभाव।

ख. नम्रता का तरीका।

ग. नम्रता के ''चिन्ह्''।

ख. नम्रता का स्वभाव।

१. आइए पहले हम चर्चा करें कि नम्रता क्या नहीं है (झूठी नम्रता)।

क. हो सकता है कि कोई पहली नजर में यह सोचे कि गिनती १२रू३ उनकी अचानक प्रसिद्धि और महत्व के प्रति मूसा की **प्रतिक्रिया** का एक बढ़ा-चढ़ा कर किया गया वर्णन है।

१) कुछ लेखक मूसा की नम्रता का वर्णन किसी ऐसी चीज के रूप में करते हैं जिसे उन्होंने दूसरों को समझाने की कोशिश लेकिन स्वयं को उससे बचाने का प्रयास किया जिससे वह अहंकारी होने से बच जाए।

२) वे मूसा की नम्रता को परमेश्वर के प्रत्युत्तर के बजाय मनुष्यों के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में वर्णित करते हैं। यह कुछ ऐसा था जिसे उन्होंने हासिल करने की कोशिश की।

टिप्पणियाँ -

ख. यह वर्णन झूठी नम्रता का वर्णन है और इसका उस नम्रता से कोई संबंध नहीं जो हम मूसा के जीवन में देखते हैं।

१) कुलुस्सियों २:१८-२३ का अध्ययन करें।

२) झूठी नम्रता उस नम्रता के विपरीत है जो ''परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है (पद १९ ख)।'' इसका परिणाम "शारीरिक भोग-विलास को रोकने में इसका कोई मूल्य नहीं है (पद २३ख)।"

२. आइए अब हम सच्ची नम्रता के स्वभाव पर विचार करें।

क. नम्रता के तीन प्रमुख सिद्धांत हैं।

१) नम्रता महानता को नहीं खोजती, यह परमेश्वर को खोजती है।

क) इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि नम्रता अगुवाई करने का प्रयास नहीं करती, यह परमेश्वर की अगुवाई में चलने का प्रयास करती है।

ख) मूसा का जीवन उसे करने से भरपूर था जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए कहा। यह अगुवाई में चलने का जीवन था।

(१) यहाँ तक कि हम देखते हैं कि मूसा की मृत्यु के लिए भी उनकी अगुवाई की गई (व्यवस्थाविवरण ३२:४८-५२)।

(२) कैसे मूसा ने इन निर्देशों का पालन किया इसे देखने के लिए व्यवस्थाविवरण ३४ पढ़ें।

२) नम्रता महानता के बीच एक व्यक्ति को स्वयं की ओर संकेत करने से दूर करती है।

क) जब हम अपने जयंवत होने या विजय प्राप्त करने के बारे में चर्चा करते हैं तो हम अक्सर अपने ऊपर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, लेकिन नम्रता हमें परमेश्वर की ओर संकेत करती है।

ख) मूसा ने, परमेश्वर के कई अन्य नम्र लोगों के समान अपनी महानता के बीच परमेश्वर की ओर संकेत किया।

(१) उत्पत्ति ४१:१६ में यूसुफ और साथ ही दानिय्येल २:२७-३० में दानिय्येल के शब्दों पर विचार करें।

(२) मूसा ने सफलता के लिए स्वयं को श्रेय देने के प्रलोभन को दूर किया। ध्यान दें कि निर्गमन १८:८ में, कैसे मूसा यहोवा पर ध्यान केंद्रित करते हैं जब वे यित्रो को निर्गमन के बारे में बताते हैं।

टिप्पणियाँ -

ग) इस सिद्धांत में यह विचार भी शामिल है कि नम्रता स्वार्थी तरीके से सफलता का लाभ नहीं उठाती।

(१) उदाहरण के लिए, मूसा की सफलता के बीच, उन्हें एक ''महान और सामर्थी राष्ट्र'' बनने का मौका मिला। हालाँकि, वह उन राष्ट्रों के बीच जिन्होंने उनकी प्रसिद्धि सुनी थी'' परमेश्वर की प्रतिष्ठा के बारे में अधिक चिंतित थे (देखें गिनती १४:१२-१७)।

(२) साथ ही विचार करें कि कैसे दानिय्येल ने अपनी प्रसिद्धि का फायदा उठाने की कोशिश नहीं की (दानिय्येल ५:१७)।

घ) नम्रता का स्वभाव अपने स्वयं के फायदों की और देखने के बजाय लोगों की अगुवाई परमेश्वर की प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, सम्मान और महिमा की ओर करता है।

३) सच्ची नम्रता अपने महत्व के प्रति लगभग अचेतन होने का परिणाम है।

क) यूहन्ना बपतिस्मादाता (यूहन्ना १:२१) और पौलुस (१ तीमुथियुस १:१५) के समान, मूसा अपनी बडाई के प्रति अचेतन थे। ध्यान दें कि कैसे मूसा अज्ञात थे कि परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के बाद उनका मुख चमक रहा था (निर्गमन ३४:२९)।

ख) हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि नम्रता सम्मान या आत्मविश्वास की कमी नहीं है। नम्र्रता उच्च "आत्म-सम्मान" और "आत्म-विश्वास" के बजाय "परमेश्वर-सम्मान" और "परमेश्वर पर भरोसे" की ओर ले जाती है।

(१) इस प्रकार का आत्मविश्वास परमेश्वर पर भरोस और निर्भरता से आता है। सम्मान उनके प्रति आज्ञाकारिता और इसकी समझ से आता है कि वे कौन हैं।

(२) याद रखें कि निम्न सम्मान की तरह, झूठी नम्रता घमंड़ की अभिव्यक्ति है। कभी-कभी यह नम्रता के समान प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में घमंड़ की प्रतिक्रिया है क्योंकि यह स्वयं पर केंद्रित होती है। एक निम्न सम्मान जो कहता है कि ''मैं यह नहीं कर सकता'' अक्सर घमंड़ का परिणाम होता है जो परमेश्वर के बजाय स्वयं पर केंद्रित होता है।

टिप्पणियाँ -

(क) ऐसा लगता है कि पृथ्वी के सबसे नम्र व्यक्ति को भी इस तरह की झूठी नम्रता पर जय पानी पड़ी। मूसा के निम्न सम्मान ने परमेश्वर की योग्यताओं के बजाय स्वयं की योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित किया।

(ख) निर्गमन ४:१०-१४ देखें और ध्यान दें कि इस कारण से ''परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का''।

ख. नम्रता के स्वभाव में विश्वास और प्रर्थाना भी शामिल है।

१) विश्वास।

क) मूसा विश्वास के जन थे क्योंकि वे परमेश्वर के बगैर अपनी असहायता और व्यर्थता को समझ गए थे।

ख) विश्वास की शुरूआत यूहन्ना १५:५ में पाए जाने वाले सत्य को स्वीकार करने से होती है। नम्रता वह चीज है जो आपको इस सत्य को स्वीकार करने में सक्षम बनाती है।

ग) इस प्रकार, विश्वास और नम्रता एक दूसरे के साथ स्वभाविक रूप से जुड़े हैं।

(१) नम्रता का विरोध (घमंड) विश्वास का तिरस्कार है। जब हम स्वयं में विश्वास (घमंड) के लिए मरते हैं, हम इसे परमेश्वर में विश्वास से बदल देते हैं, और हम ''अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलना शुरू करते हैं'' (मीका ६:८)।

(२) विश्वास का एक महान जन होने के लिए, पहले नम्रता का महान जन होना आवश्यक है। मूसा विश्वास के महान जन थे क्योंकि वे नम्रता के महान जन थे।

२) प्रार्थना।

क) प्रार्थना करना स्वयं को परमेश्वर के सामने नम्र करना है। परमेश्वर से यह कहना ''उचित'' है कि ''मैं नहीं कर सकता लेकिन आप कर सकते हैं।'' प्रार्थना आपको अपने आप का भरोसा छोड़ने और परमेश्वर में भरोसा रखने की ओर ले जाती है।

ख) इस प्रकार, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पृथ्वी पर सबसे नम्र व्यक्ति एक महान प्रार्थना योद्धा भी थे। मूसा ने निर्भरता, खालीपन और नम्रता के कारण परमेश्वर से बातें की।

टिप्पणियाँ -

ग. मूसा के जीवन में नम्रता का विकास।

१. विशेष घटनाएँ और परिस्थितियाँ।

क. चालीस साल बंधुआई में।

१) एक नम्र व्यक्ति के रूप में मूसा का प्रारम्भिक विकास एक परिस्थिति से शुरू हुआ जिसने उनके अंदर के अहंकार को उजागर किया।

क) निर्गमन २:११-१४ में, हम एक व्यक्ति को देखते हैं जो परमेश्वर से आगे था और मामलों को अपने हाथों में लेता था। मूसा कि नम्रता की कमी के परिणामस्वरूप उनके द्वारा इब्री दासों की देखरेख करने वाले एक मिद्यानी की हत्या करके इस्राएल को छुड़ाने का प्रयास किया गया। ऐसा करने में उन्होंने परमेश्वर के समय और संप्रभुता को नकार दिया।

ख) परमेश्वर ने विडबंनापूर्ण तरीके से अहंकार के इस प्रदर्शन का इस्तेमाल मूसा को एक ऐसी परिस्थिति में प्रवेश कराने के लिए मजबूर करने के लिए जो उन्हें नम्रता सिखाएगी।

२) अगले ४० सालों के लिए, मूसा, मिस्र का महान व्यक्ति, जगंल में यित्रो की भेड़-बकरियों का विनम्र चरवाहा बन गया। निसंदेह, मूसा के जीवन के अगेल ४० सालों का इस्तेमाल परमेश्वर ने उन्हें नम्रता सिखाने के लिए किया।

ख. मूसा के जीवन पर परमेश्वर की बुलाहट।

१) निर्गमन ३ और ४ में परमेश्वर द्वारा मूसा की बुलाहट पर, हम नम्रता प्रशिक्षण के उन ४० सालों के फल को देखते हैं। अपनी खुद की नजरों में, अब मूसा फिरौन के महलों का विशेष गोद लिया हुआ पुत्र नहीं थे, जो इस्राएल को उसके शत्रुओं से छुड़ाने में सक्षम था। वह, वह व्यकित बन गए जिन्होंने कहा, ''मैं कौन हूँ'', जब परमेश्वर ने उन्हें इस्राएलियों को छुडाने की आज्ञा दी (निर्गमन ३:१०,११)।

क) साथ ही मूसा ने अपनी अपर्याप्तता को महसूस किया।

ख) दूसरों पर विचार करें जिन्होंने महान बुलाहट प्राप्त की (यिर्मयाह १:६; १ शमूएल ९:२१; न्यायियों ६:१५)। मूसा ने उस खाली स्थान में अपनी असहायता को समझा और महसूस किया जो उनकी व्यक्तिगत योग्यता और उस कार्य के बीच था जो उन्हें सौंपा गया था।

टिप्पणियाँ -

२) हमें अपने आप को याद दिलाना चाहिए कि, उनके जीवन के इस बिंदु पर, उनकी नम्रता को अभी भी परिपक्व होने की आवश्यकता थी (निम्न सम्मान के विषय में उपरोक्त टिप्पणियों को देखें)।

क) क्या नम्रता के लिए यह कहना पर्याप्त नहीं है कि ''मैं इसे नहीं कर सकता।'' नम्रता को इस विचार को इन शब्दों के साथ पूरा करना चाहिए ''परमेश्वर इसे कर सकते हैं।''

ख) मूसा अभी भी अपनी स्वयं की कमजोरी और अपर्याप्तात से दूर देखने और परमेश्वर के बल और योग्यता की ओर देखने के लिए पर्याप्त नम्र नहीं थे। इसलिए परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का (निर्गमन ४:१४)।

टिप्पणी: मूसा की नम्रता परिपक्व हुई। उन्होंने परमेश्वर की पर्याप्तता की ओर देखना सीखा। फिर, मूसा की ओर क्रोध के देखने के बजाय, परमेश्वर ने उनकी ओर अनुग्रह से देखा (देखें निर्गमन ३३:१२-१७)।

ग. रपदीम में मूसा के लिए एक नम्रता का पाठ।

१) मूसा की नम्रता का परिपक्व होना तत्काल आवश्यकता थी। मिस्र में चमत्कार और लाल समुद्र को पार करने की महान घटनाओं के बाद, मूसा घमंड और आत्म-विश्वास के लिए बहुत असुरक्षित थे।

२) दिलचस्प बात यह है कि, रपदीम में परमेश्वर मूसा को एक परिस्थिति में लाए (निर्गमन १७:१) जिसने मूसा को अपनी अपर्याप्ता को याद करने के लिए मजबूर किया।

क) वास्तव में, लगभग पत्थरवाह कर मारे जाने के बीच में (निर्गमन १७:४) मेंए मूसा को याद दिलाया गया कि वह परमेश्वर पर पूरी तरह से निर्भर हैं। वह नम्रता में बढ़े जब उन्होंने देखा कि वे परमेश्वर पर कितना अधिक निर्भर हैं।

ख) एफ. बी. मेयर लिखते हैं, ''जब हम स्वयं के अंत तक पहुँच चुके हैं, तो हम परमेश्वर की शुरूआत में आ गए हैं।''[१]

२. नम्रता की सामन्य प्रक्रिया।

क. संपूर्ण इस्राएल नम्र किए जाने की प्रक्रिया से गुजरा। मूसा कोई अपवाद नहीं थे।

१) परमेश्वर ने इस्राएलियों को नम्र किया (व्यवस्थाविवरण ८:३) और उनकी परीक्षा की (व्यवस्थाविवरण ८:१६)।

टिप्पणियाँ -

२) सामान्य रूप से, जगंल में भड़कने और पूर्ण रूप से असहाय होने की पूर्ण प्रक्रिया को निश्चित रूप से इस्राएलियों के भीतर नम्रता को उत्पन्न करना चाहिए था।

क) जिन्होंने जंगल में भटकने के सालों का अनुभव किया वे दुःखों से परिचित थे।

ख) बहुत से विद्वान गिनती १२:३ में नम्रता के रूप में अनुवादित किए गए इब्रानी शब्द को सीधे दुःखों से संबंधित होने के रूप में परिभाषित करते हैं। विचार यह है कि दुःख नम्रता को उत्पन्न करता है।

ख. जब हम मूसा के जीवन के अंतिम ४० वर्षों के विवरण को पढ़ते हैं, हम देख सकते हैं कि कैसे वे अपने और अपनी इच्छाओं के प्रति अधिक और अधिक उदासीन हो गए। वह अधिक से अधिक केवल परमेश्वर की इच्छा और इस्राएलियों की सेवा करने में रूची रखते थे। अपने और अपनी इच्छाओं में रूची खोने की जिस प्रक्रिया से मूसा गुजरे यह वही प्रक्रिया थी जिससे होकर वे नम्रता में बढे।

घ. नम्रता के चिन्ह्।

१. परिचय।

क. इस खंड में हम कुछ रवैयों ओर क्रियाओं पर विचार करेंगे जो नम्रता का प्रतीक हैं।

ख. यह खंड नम्रता के तीन मुख्य पहलू प्रस्तुत करता है।

१) मूसा ने अपनी ओर से ध्यान हटाया।

२) मूसा ने दूसरों की ओर ध्यान लगाया।

३) मूसा ने दूसरों का आदर किया।

२. मूसा ने अपनी ओर से ध्यान हटाया।

क. नम्रता की कमी का परिणाम अपने आप पर घमंड़ करना है।

१) लोग इस पर घमंड करते हैं कि वे क्या हैं और उन्होंने क्या किया है।

२) साथ ही लोग इस पर भी फूलते हैं कि वे क्या नहीं है और उन्होंने क्या नहीं किया (उनकी अपने विषय में झूठी धारणा)।

टिप्पणियाँ -

३) मूसा इस प्रलोभन में नहीं गिरे। उनकी नम्रता ने उन्हें स्वयं के लिए महिमा को स्वीकार करने से बचाया जब यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर की थी।

क) उदाहरण के लिए, लाल समुद्र को पार करने के बाद, मूसा ने विजय का बहुत सुन्दर गीत गया। हम यह प्रश्न पूछ सकते हैंः गीत में मूसा का नाम कहाँ है? उत्तर यह है कि यह नहीं है (देखें निर्गमन १५)।

(१) मूसा के गीत में परमेश्वर के ४६ संदर्भ हैं। मूसा का कोई संदर्भ नहीं है।

(२) मूसा के पास स्वयं के विषय में उचित (विनम्र) दृष्टिकोण था। उन्होंने यह सीखा की मनुष्य परमेश्वर के हाथों में एक पात्र है। पात्र केवल परमेश्वर की अनुमति और सहयोग से ही काम कर सकता है। यह सिद्धांत १ कुरिन्थियों ४:७ में विकसित किया गया है।

ख) एक ऐसे समय में जब स्वयं पर ध्यान केंद्रित करन बहुत सरल था, मूसा ने अपने ऊपर से ध्यान हटा कर परमेश्वर की ओर संकेत किया।

ख. नम्रता की कमी का परिणाम अपने आप के लिए महिमा स्वीकार करता है।

१) निर्गमन ३४:३४, ३५ में, हम देखते हैं कि मूसा परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के बाद अपना चमकता हुआ चेहरा दिखा सकते थे। इसके बजाय, उन्होंने इसे ढक दिया जब उन्हें दूसरों से बात करने की जरूरत थी।

क) नम्रता ने उन्हें महिमा स्वीकार न करने के लिए प्रेरित किया।

ख) नम्रता ने उन्हों दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रेरिता किया।

२) फिर से, हम देखते हैं कि मूसा अपने ऊपर से ध्यान हटाया।

ग. नम्रता की कमी स्वयं के लिए हर एक मौके का लाभ उठाने का प्रयास करती है।

१) मूसा के पास अपनी प्रसिद्धि, प्रभाव और कीर्ति का लाभ उठाने के बहुत से मौके थे। वह संभावित रूप से सारे मिस्र देश पर नियंत्रण लेने का प्रयास कर सकते थे (निर्गमन ११:३ पर विचार करें)।

२) सच्ची नम्रता से कुछ भी कम उनके लिए परिस्थिति का लाभ उठाने का कारण हो सकता था। हालाँकि, मूसा ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया और ऐसे प्रलोभन में नहीं पड़े।

टिप्पणियाँ -

घ. नम्रता की कमी का परिणाम आसानी से दूसरों के द्वारा ठोकर खाना हो सकता है।

१) मूसा लगातार अन्यापूर्ण आरोपों के बीच रहे। उन्होंने इन आरोपों को नजर अंदज नहीं किया, लेकिन उनकी नम्रता ने उन्हें ठोकर खाने से बचा लिया। उन्होंने आरोप लगाने वालों से बदला लेने की कोशिश नहीं की।

क) निर्गमन १४:११-१३; १६:२-८; और गिनती १२:१-५ पर विचार करें।

ख) मूसा ने, मसीह के समान, कोई भी आवश्यक प्रतिशोध परमेश्वर पर छोड दिया। उन्हें भला बुरा कहा गया, लेकिन उन्होंने भला बुरा कहने वालों को आशीष दी (देखें १ कुरिन्थियों ४:१२)।

२) जो विनम्र होते हैं वे दूसरों का न्याय नहीं करते। वे भरोसा करते हैं कि परमेश्वर उचित रीति से मामले का न्याय करने में सक्षम हैं।

क) इस प्रकार, नम्रता ''आराम'' और ''शांति'' की अवधारणा से नजदीकी से संबंधित है। नम्रता एक व्यक्ति को सबकुछ परमेश्वर को सौंपने में (जिसमें कड़वाहट भी शामिल है) सक्षम बनाती है।

ख) शायद मन में इस विचार के साथ, हम नम्रता और ''अपनी सारी चिंता को उसी पर डालने'' के बीच संबंध को बेहतर ढ़ग से समझ सकते हैं (१पतरस ५:५-७)।

३. मूसा ने दूसरों की ओर देखा, अपनी ओर नहीं।

क. नम्रता की कमी आदर और महिमा को स्वीकार करने का चुनाव करती है और दूसरों पर विचार नहीं करती।

१) निर्गमन ३२:१०-१२ में, मूसा ने स्वयं के लिए महिमा प्राप्त करने की कीमत पर इस्राएल के लोगों की ओर से परमेश्वर से विनती की। मूसा की नम्रता ने उन्हें अपनी संतुष्टि को अस्वीकार करने और दूसरों की संतुष्टि की अच्छा रखने की अनुमति दी।

२) साथी ही गिनती १४:१२-१९ में समान परिस्थिति पर विचार करें।

ख. नम्रता की कमी सारी आशीषों को प्राप्त करनी की इच्छा करती है। यह बाँटती नहीं।

१) गिनती ११:२९ और गिनती १२:१, २ पढ़ें।

क) नम्रता आशीषों को बाँटने की वास्तविक इच्छा को पैदा करती है। नम्रता ही वह चीज है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति को सफल होते देखने का इच्छुक बनाती है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

फिलिप्पियों २:३,४ के संदर्भ में पिछले बिंदु पर विचार करें।

ख) घमंड दूसरें व्यक्ति को विफल होते देखने की एक गुप्त इच्छा को पैदा करता है। यह दूसरों की योग्यताओं और प्रतिभाओं के संबंध में जलन और कटवाहट की ओर ले जाता है।

चर्चा विषय

चर्चा करें कि कैसे पिछला बिंदु रोमियों १२:३-६ से संबंधित है।

ग. नम्रता की कमी सेवकाई को छोड़ और उसका विस्तार नहीं कर सकती।

१) मूसा की नम्रता ने उन्हें सेवकाई को पकड़े रहने की कोशिश किए बिना इसे को छोड़ने की अनुमति दी। उन्होंने आनंद के साथ अपनी सेवकाई दे दी। ध्यान दें कि व्यवस्थाविवरण ३१:७ और गिनती २७:१६-२३ में जब मूसा ने यहोशू को आज्ञा दी तो वहाँ संघर्ष की कोई भावना नहीं है।

२) सेवकाई का विस्तार करने के लिए, आपको इसे देने के लिए इच्छुक होना चाहिए। मूसा ऐसा करने के इच्छुक थे। आज कलीसिया में हमें नम्रता के इस पहलू की अधिक आवश्यकता है।

४. मूसा ने दूसरों का आदर किया।

क. नम्रता की कमी का परिणाम दूसरों के लिए आदर की कमी है।

१) मूसा की नम्रता ने उन्हें दूसरों का आदर करने में सक्षम बनाया।

२) मूसा की उनके सुसर (यित्रो) के साथ बात-चीत पर विचार करें।

क) निर्गमन ४:१८ में, हम देखते हैं कि मूसा को स्वयं परमेश्वर के द्वारा अलौकिक निर्देश प्राप्त हुआ। फिर भी, उन्होंने अपने आप को इतना विशेष नहीं समझा कि उन्हें बड़ों के प्रति सम्मान दिखाने की आवश्यकता नहीं है। मूसा और यित्रो के बीच एक समझौता हुआ (निर्गमन २:२१) और उस समय भी मूसा उसका सम्मान करने करने में पर्याप्त नम्र थे जबकि वे आसानी से उसे अनदेखा कर सकते थे।

टिप्पणियाँ -

ख) निर्गमन १८:१७-२७ में, हम देखते हैं चमत्कारिक निर्गमन के अगुवे थे। वह सारे राष्ट्र में प्रसिद्ध थे। फिर भी, वह यित्रो से सलाह लेने में सक्षम थे, जिनका उस समय जो समस्या हाथ में थी उससे कोई संबंध प्रतीत नहीं होता।

ग) नम्रता ने मूसा को यित्रों का आदर करने में सक्षम किया। उस आदर ने मूसा को उनकी सलाह से लाभ लेने में सक्षम किया।

ख. नम्रता कमी अक्सर शिकायत के जीवन की ओर ले जाती है।

१) मूसा शिकायत करने वालों में से एक नहीं थे जबकि उनके पास बहुत से अवसर थे जब वे शिकायत कर सकते थे। उनकी नम्रता ने उन्हे शिकायत करने की अनुमति नहीं दी।

क) नम्रता में इस तथ्य की स्वीकृति शामिल होती है कि आपके पास पकड़े रहने का कोई अधिकार नहीं है। यह समझती है आप कुछ भी प्राप्त करने के लायक नहीं हैं। परमेश्वर देते हैं और जैसा उन्हें भाता है वापस ले लेते हैं, क्योंकि वह परमेश्वर हैं। उनके पास वह सबकुछ करने का अधिकार है जिससे वे प्रसन्न होते हैं। एक नम्र व्यक्ति इसे स्वीकार करता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह शिकायत नहीं करता।

ख) नम्रता एक व्यक्ति के अपने ''अधिकारों'' के प्रति विचरों को कम करती है। घमंड एक व्यक्ति की अपेक्षा को बढ़ाता है कि वह किसके योग्य है। अंततः यह शिकायत करने की ओर ले जाता है।

२) मूसा से तब भी शिकायत नहीं की जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में नहीं जा सके।

क) यदि किसी व्यक्ति को परमेश्वर के सामने कुछ दावा करने का ''अधिकार'' था तो वे मूसा थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन इस्राएलियों की अगुवाई प्रतिज्ञा की भूमि की ओर करने के लिए दे दिया। हालाँकि, परमेश्वर ने मूसा को प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी।

ख) मूसा ने शिकायत नहीं की। उनकी नम्रता ने उन्हें परमेश्वर पर प्रश्न उठाए बिना उनके न्याय को स्वीकार करने में सक्षम बनाया। उन्होंने विरोध नहीं किया। उन्होंने अपने अधिकारों का ''दावा'' नहीं किया। उन्होंने परमेश्वर के न्याय पर सवाल नहीं उठाया। इसके बजाय, उन्होंने परमेश्वर की महिमा की (देखें व्यवस्थाविवरण ३२:४८-५२; व्यवस्थाविवरण ३३)।

टिप्पणियाँ -

ङ. निष्कर्ष।

१. नम्रता मसीही चरित्र का आवश्यक भाग है। मूसा का जीवन हमें एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रदान करता है कि कैसे परमेश्वर चरित्र के इस भाग का निर्माण अपने लोगों में कर सकते हैं।

२. प्रत्येक मसीही को यह सुझाव दिया जा सकता है कि वह मूसा की नम्रता के लिए प्रार्थना करने को अपने नियमित प्रार्थना जीवन का हिस्सा बनाएँ।

क. इस प्रर्थाना में परमेश्वर से यह निवेदन शामिल होना चाहिए कि वे हमें उस घमंड के प्रति कायल करें जो हमारे विचारों, शब्दों, रवैये और क्रियाओं में है।

ख. यदि हम इसकी इच्छा रखते हैं और मांगते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे जीवन में काम करना शुरू करेगा। वह हमें घमंड के विषय में कायल करेगा, और उसकी सामर्थ्य के द्वारा वह घमंड को नम्रता से बदल देगा।

IV. अगुवाई।

क. परिचय।

१. व्यवस्थाविवरण २८:१३ में परमेश्वर ने अपने लोगों से बहुत महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा की। परमेश्वर ने उनसे कहा कि यदि वे उसकी आज्ञा का पालन करें तो वह उन्हें ''पूछ नहीं परन्तु सिर ही ठहराएगा।''

क. मसीही आदम के पापमय पतन से प्रभावित संसार में रहते हैं। हालाँकि, उनसे कहा गया है कि उन्हें पृथ्वी का नमक होना चाहिए। उन्हें ज्योति होना चाहिए (मत्ती ५:१३, १४)। उन्हें पाप के इस संसार में गिरे हुए बंदियों को स्वतंत्रता की ओर ले जाने वाले अगुवे होना चाहिए।

ख. जब मसीही अगुवे नहीं होते, तो संसार ''अंधे द्वारा अंधे की अगुवाई'' करने के दर्दनाक परिणामों से पीड़िता होता है (मत्ती १५:१४)।

टिप्पणियाँ -

२. मसीही चरित्र से संबंधित इस पाठ्यक्रम में, एक अगुवे के चरित्र के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना आवश्यक है। ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका नहेम्याह के चरित्र का अध्ययन करना है।

क. नहेम्याह की पुस्तक का समायोजन एक राष्ट्र निर्माण के इर्द-गिर्द घूमता है।

१) ५८७ ई.पू. में, बेबिलोनियों ने यहूदा को बंधुवाई में भेज दिया। बेबीलोन के फारसियो के हाथों गिरने के बाद, कुस्त्रू ने पिछली बेबीलोन नीति को उलट दिया और यदूदियों को ५३८ ई.पू. में यरूशलेम वापस जाने की अनुमति दी। पहले यहूदी जो यरूशलेम लौटे उन्होंने एक वेदी बनाई और मंदिर का पुनः निर्माण किया (एज्रा १-६)। फिर भी नगर असुरक्षित रहा। इसकी कोई दीवार नहीं थी।

२) ४४५ ई.पू. में, नहेम्याह नगर की शहरपनाह बनाने के लिए यरूशलेम वापिस आए। ५२ दिनों में वह विशाल परियोजना पूर्ण की गई (नहेम्याह ६:१५)। परमेश्वर ने इस महान कार्य को पूरा करने के लिए इस्राएल के लोगों की अगुवाई करने में नहेम्याह का इस्तेमाल किया।

ख. विशेषरूप से पहले छः अध्यायों में, हम नहेम्याह के अगुवाई के स्पष्ट गुणों को देख सकते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इन अध्यायों का अध्ययन एक अगुवे के चरित्र का नमूना बनाने में शरूआत करने के लिए कर सकते हैं।

३. निम्नलिखित अध्ययन में इसकी रूपरेखा के भीतर तीन मुख्य बिंदु शामिल हैंः

क. अगुवे का चरित्र जैसा कि वह परमेश्वर से संबंधित है।

ख. अगुवे का चरित्र जैसा कि वह दूसरों से संबंधित है।

ग. अगुवे का चरित्र जैसा कि वह स्वयं से संबंधित है।

टिप्पणी: सभी बाइबल के संदर्भ नहेम्याह की पुस्तक से संबंधित हैं जब तक कि अन्यथा संकेत न दिया गया हो।

टिप्पणियाँ -

ख. अगुवे का चरित्र जैसा कि वह परमेश्वर से संबंधित है।

१. अगुवे की परमेश्वर पर स्वभाविक निर्भरता है।

क. किसी समस्या के अस्तित्व के प्रति नहेम्याह की पहली और तत्काल प्रतिक्रिया परमेश्वर को खोजना थी। (विचार करें कि कैसे नहेम्याह ने १:५ में यह किया।)

ख. नहेम्याह ने तुरन्त परमेश्वर पर विचार किया जब एक निर्णय लेना जरूरी था। (विचार करें कि कैसे नहेम्याह ने २:४ में यह किया।)

२. अगुवा प्रार्थना करने वाला जन होता है।

क. जैसा कि हमने मूसा के जीवन से सीखा, अगुवे के चरित्र में परमेश्वर की अगुवाई में चलने की इच्छा शामिल होती है। एक व्यक्ति जो परमेश्वर की अगुवाई में चलता है अक्सर परमेश्वर की बाट जोहता है।

१) नहेम्याह ने काम करने से पहले चार महिने प्रतीक्षा और प्रार्थना की (किसलवे नामक महीने से (१:१) नीसान नामक महीने तक (२:१) जो दिसंबर के महीने से अप्रैल के महीने के समान है)।

२) एक अगुवे का चरित्र उसे दृढ़ रहने में सक्षम बनाने वाला होना चाहिए। उसे अक्सर प्रतीक्षा करनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर हमारे समान कार्य करने में जल्दी नहीं करते!

ख. एक अगुवे को अपनी योजना पर काम करने का प्रयास करने के बजाय परमेश्वर की योजना को खोजना चाहिए। इस प्रकार, उसकी प्रार्थना वह नहीं होगी जो वह पहले से मन या इच्छा में निर्धारित करता हैं। किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करने से पहले, वह परमेश्वर से निर्देश **प्राप्त** करने के लिए प्रार्थना करता है कि क्या प्रार्थना करनी है और किस बात के लिए विश्वास करना है।

१) हम कह सकते हैं अगुवा विश्वास की प्रार्थना करने से पहले परमेश्वर की इच्छा को खोजने की प्रार्थना करता है (तब उसके विश्वास के पास खड़े होने के लिए आधार होता है)।

२) नहेम्याह ने १:१ में विश्वास की प्रार्थना को करन से पहले चार महीने तक परमेश्वर की इच्छा को खोजने की प्रार्थना की।

टिप्पणियाँ -

ग. प्रार्थना में, एक अगुवा परमेश्वर को लोगों की ओर उतना नहीं ले जाता जितना की वह उन लोगों को परमेश्वर की ओर ले जाता है जिनकी वह अगुवाई करता है। वह परमेश्वर को नहीं बताता कि क्या करना है। वह दूसरों को परमेश्वर के सामने प्रसतुत करता है, उनके लिए मध्यस्ती करता है, और परमेश्वर से उनकी सहायता करने और अगुवाई करने के लिए कहता है। वह अपने लोगों की ओर से परमेश्वर के पास जाता है।

१) यहाँ हमें उन लोगों के साथ पहचान के महत्व का उल्लेख करना चाहिए हैं, जिनकी आप अगुवाई कर रहे हैं। ऐसे लोगों की ओर से परमेश्वर के सामने जाना बहुत मुश्किल है यदि आपकी पहचान उन लोगों के साथ नहीं होती।

२) पहचान में ''सामुहिक जिम्मेदारी'' की भावना शामिल है। एक अगुवा अपने लोगों के पापों और दोष से परिचित होना चाहिए। नया नियम हमें दिखाता है कि हमें एक साथ दुःख उठाना चाहिए (१ कुरिन्थियों १२:२६), एक दूसरे का भार उठाना चाहिए (गलातियों ६:२), और भाईयों के पाप पर शोक करना चाहिए (१ कुरिन्थियों ५:२)।

क) १:६, ७ का अध्ययन यह देखने के लिए करें कि कैसे नहेम्याह ने अपने लोगों के लिए परमेश्वर से एक वकील के सामन विनती की।

ख) अन्य महान अगुवों जैसे अब्राहम, मूसा, यिर्मयाह, और दानिय्येल ने परमेश्वर के सामने इस प्रकार की विनती की।

(१) ये सभी परमेश्वर की प्रतिष्ठा के लिए जलन रखते थे (परमेश्वर के संबंध में अगुवा)।

(२) इन सभी में दूसरों के प्रति गहन और वास्तविक प्रेम था (दूसरों के संबंध में अगुवा)।

(३) ये सभी अपने जीवन के विषय में चिंतित नहीं थे। वे निःस्वार्थ थे (स्वयं के संबंध में अगुवा)

३. अगुवा एक विश्वास का जन होता है।

क. १:५ में, हम देखते हैं कि नहेम्याह सकारात्मक सोच वाले थे। वह विश्वास के जन थे। यह सकारात्मक सोच और विश्वास किस पर आधारित था? यह तीन चीजों पर आधारित था।

१) यह उनके इस दृढ़ विश्वास पर आधारित था कि परमेश्वर उनकी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है। विश्वास इससे शुरू होता है कि परमेश्वर कौन है। उनकी प्रार्थना इस बयान के साथ शुरू होती है कि परमेश्वर कौन है, जो परमेश्वर की योग्यता पर केंद्रित है ''हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान और भययोग्य ईश्वर।''

टिप्पणियाँ -

२) यह उनके इस दृढ़ भरोसे पर आधारित था कि उनका परमेश्वर विश्वासयोग्य और उनकी प्रार्थना का उत्तर देने का इच्छुक था। विश्वास इस भरोसे के साथ जारी रहता है कि परमेश्वर आपकी ओर है आपके विरोध में नहीं। उनकी प्रार्थन इस अनुस्मारक के साथ जारी रहती है कि परमेश्वर न्याय और प्रेम का परमेश्वर है ''जो वाचा का पालन और करूणा करता है।''

३) यह उनके स्वयं सही स्थिति में होने के भरोसे पर आधारित था। विश्वास में इसकी समझ शामिल होती है कि आप कौन हैं। नहेम्याह की प्रार्थना उन लोगों के एक विवरण के साथ समाप्त होती है जिनकी परमेश्वर सहायता करना चाहते थे। ये वे थे जिनका परमेश्वर के साथ एक संबंध था और जिन्होंने उनकी आज्ञा का पालन किया ''उन लोगों के लिए जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं।''

ख. ''सकारात्मक सोच'' की यह परिभाषा सकारात्मक सोच के बारे में कुछ लोकप्रिय, आधुनिक शिक्षाओं से कुछ अलग है। बाइबल आधारित परिभाषा परमेश्वर की प्रतिज्ञा और उस पर ध्यान केंद्रित करती है जो परमेश्वर ने पहले ही कहा है। आधुनिक शिक्षाएँ अक्सर मनुष्य की इच्छाओं और उस पर ध्यान केंद्रित करती हैं जो मनुष्य कहता है।

ग. याद रखें, विश्वास परमेश्वर की बाट जोह सकता है। विश्वास के विषय में आधुनिक समय की शिक्षा अक्सर तुरन्त संतुष्टि के विचार पर ध्यान केंद्रित करती है। प्रार्थना की आवश्यकता या परमेश्वर से एक अनुमति के विषय में, यह शिक्षा कहती है कि ''हम इसका नाम ले सकते हैं और इसका दावा कर सकते हैं।''

१) विश्वास की बाइबल आधारित शिक्षा अक्सर विश्वास और बाट जोहने की प्रक्रिया (और अक्सर पीड़ा) जो शामिल होती है पर जोर देती है (इब्रानियों ११ के माध्यम से पढ़ें)। परमेश्वर की ओर से एक प्रतिज्ञा के संबंध में, यह कहा जाता है कि हमें ''इसे ग्रहण करना और इस पर विश्वास करना चाहिए।''

२) बाट जोहते समय, विश्वास वर्तमान की वास्तविकता को नकारे बिना आगे देख सकता है (यह विश्वास के कुछ प्रसि) ''सकारात्मक अंगीकार'' धर्मशास्त्र पहलुओं के विरुद्ध जाता है।

४. अगुवा परमेश्वर को जानता है।

क. नहेम्याह ऐसे व्यक्ति थे जो परमेश्वर और उनकी प्रतिज्ञाओं को जानते थे (देखें १:८, ९)। हम देख सकते हैं कि कोई व्यक्ति परमेश्वर को कितनी अच्छी तरह जानता है, जो सच्चा अगुवा है, वह यह निर्धारित करेगा कि वह व्यक्ति कितनी अच्छी तरह दूसरों को अगुवाई कर सकता है।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

एक फुटबॉल मैदान पर एक प्रभावी क्वार्टरबैक अर्थात पीछे खेलने वाले खिलाड़ियों का समूह जानता है कि उसका कोच किनारे पर क्या सोच रहा है।

अधिक व्यावहारिक रूप से, यह क्वार्टरबैक है जो अन्य खिलाड़ियों को दिशा दिखाते हैं क्योंकि वह किसी अन्य खिलाड़ी की तुलना में बेहद, किनारे पर कोच के संकेतों को जानते और समझते हैं।

अपना उदाहरण लिखें:

ख. उसी प्रकार, ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर की आवाज़ और उनके मार्गों को जानता है।

५. अगुवा परमेश्वर का भय मानता है।

क. नहेम्याह अपने दिनों के अगुवों की संस्कृति को छोड़ने के लिए तैयार थे (देखें ५:१५)।

१) कभी-कभी संस्कृति का तिरस्कार करना अधिकार के विरुद्ध एक विद्रोह, कड़वाहट, या अनुयायी बनाने की इच्छा से प्रेरिता होता है।

२) हालाँकि, नहेम्याह का उद्देश्य शुद्ध था। उन्होंने अपने दिनों के अगुवों की सस्कृति का तिरस्कार इसलिए किया क्योंकि वह परमेश्वर का भय मानते थे।

क) वह केवल परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते थे। वे स्वयं को या दूसरे लोगों को प्रसन्न करने के लिए चिंतित नहीं थे।

ख) इस प्रकार, उनका ''कट्टरपंथी'' कार्य परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सामान्य कार्य बन गया (रोमियों १२:२)।

टिप्पणियाँ -

ख. एक ईश्वरीय अगुवे को परमेश्वर के समीप होना चाहिए।

१) प्रभु के लिए उसकी भक्ति और जलन दूसरों को परमेश्वर के निकट लाने के लिए प्रभावित और प्रेरित करनेवाली होनी चाहिए।

२) यह निश्चित रूप से नहेम्याह की अगुवाई के माध्यम से हुआ जब उन्होंने उत्पीड़ित लोगों को प्रयास करने और लगभग असंभव कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित किया।

ग. अगुवे का चरित्र जैसा कि वह दूसरों से संबंधित है।

१. एक प्रभावशाली अगुवा प्रबन्धन और संगठन को समझता है।

क. अच्छे प्रबंधन का मूलभूत सिद्धांत एक योजना बनाने से पहले यह निर्धारित करना है कि जरूरत क्या है।

१) नहेम्याह ने महत्वपूर्ण प्रश्न को पूछने के द्वारा जो लोगों पर केंद्रित था इस सिद्धांत का अनुसरण किया (१:२)।

२) एक प्रभावशाली अगुवा पहले जरूरतों का मूल्यांकन करता है, और उसके बाद उन जरूरतों के अनुसार एक रणनीति का निर्माण करता है।

लेखक का उदाहरण:

एक अच्छा प्रशिक्षक पहले अपने खिलाड़ियों की कमियों और सामर्थ्य पर विचार किए बिना एक रणनीति का निर्माण नहीं करता। पहले वह अपने खिलाड़ियों की क्षमताओं का मूल्यांकन करता है और उसके बाद उनके चारों ओर एक रणनीति का निर्माण करता है।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

ख. संगठन का मूल सिद्धांत लोगों को पहले से मौजूद सामाजिक तंत्र या संरचना के आधार पर व्यवस्थित करना है।

१) नहेम्याह ने इस सिद्धांत का अनुसरण किया और अपने कार्यकर्ताओं को पारिवारिक ईकाइयों (३:२, १३), शिल्प (३:८), बुलाहटों (३:१, २८), गोत्रों (३:१७), और आधिकारिक पदों (३:९, १२, १५-१७) के अनुसार व्यवस्थित किया।

२) नहेम्याह स्पष्ट रूप से एक गुणवान आयोजक थे। उनके निर्माण कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं के कम से कम ३९ विभिन्न दल शामिल थे।

ग. अच्छे प्रबन्धन का नाजुक हिस्सा अधिकार सौंपना है। जो अगुवा अधिकार नहीं सौंपता वह वास्तव में एक अगुवा नहीं है। अंत में वह उन लोगों का नाष कर देगा जिनकी वह अगुवाई करता है, और विडंबनापूर्ण तरीके से अपने अगुवाई को नष्ट कर देगा।

१) प्रभावशाली अगुवे अधिकार और जिम्मेदारी सौंपते हैं क्योंकि वे दूसरों पर भरोसा करने के लिए तैयार होते है। वे उनकी स्थितियों, सामर्थ्य और अधिकार में सुरक्षित होते हैं। मत्ती १६:२५ से बाइबल आधारित सिद्धांत को याद रखें, यदि आप किसी चीज बचाएंगे तो आप उसे खोएंगे।

२) सच्चे अगुवाई के कुछ चिन्ह् दूसरों के चनुवा, प्रशिक्षण, और पदोन्नति में दिखाई देते हैं। अध्याय तीन में निर्माताओं की सूची नहेम्याह की जिम्मेदारी और अधिकार को सौंपने की इच्छा को प्रगट करती है।

घ. एक प्रभावशाली प्रबंधक अधिकार और जिम्मेदारी के बीच अंसतुलन से बचता है।

१) एक कार्यकर्ता जिसे जिम्मेदारी से अधिक अधिकार दिया गया है वह हातोत्साहित होगा और उब जाएगा।

२) एक कार्यकर्ता जिसे अधिकार से अधिक जिम्मेदारी दी गई है वह अभिभूत और अप्रभावी होगा।

क) नहेम्याह इस असंतुलन से बचे। प्रत्येक व्यक्ति को दीवार के एक विशेष हिस्से के लिए नियुक्त किया गया था जिसका निर्माण करने के लिए वह जिम्मेदार था। उसे उस क्षेत्र के कार्य पर अधिकार दिया गया था (देखें ४:१५)।

ख) परिणाम यह था कि निर्माण करने वाले अधिक प्रेरिता और प्रभावशाली थे क्योंकि वे स्पष्ट रूप से जानते थे कि उनसे क्या अपेक्षा की गई थी।

टिप्पणियाँ -

२. एक प्रभावशाली अगुवा दूसरों को प्रेरित करने में सक्षम होता है।

क. हताशा एक अगुवे का सबसे बुरा शत्रु हो सकती है। यदि आप उद्देश्य का अनुसरण करने के लक्ष्य को दूर कर देंगे, तो यह एक चपटे पहिये की कार चलाने या मालगाड़ी खींचने के समान होगा।

१) नहेम्याह के मामले में, उनके कार्यकर्ताओं पर हताशा सामर्थ्य, दर्शन और आत्मविश्वास खोने (४:१०), और सुरक्षा खोने के माध्यम से आयी (४:११)।

२) नहेम्याह ने हताशा का प्रत्युत्तर कैसे दिया?

क) उन्होंने अपने कार्यकताओं के प्रयासों को एक सामान्य लक्ष्य की ओर एकीकृत किया (४:१३)।

ख) उन्होंने उनके ध्यान को प्रभु की ओर निर्देशित किया (४:१४)।

ग) उन्होंने विचार और कार्य के बीच एक संतुलन बनाए रखा (४:१५, १६)।

घ) उन्होंने सभी को संगठित करने के लिए उनके चारों और एक बिंदु निर्धारित और परिभाषित किया (४:२०)।

ङ) उन्होंने लोगों को एक दूसरे की मदद करने के लिए संगठित और उत्साहित किया (४:२१, २२)।

ख. एक प्रभावशाली अगुवा एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने के द्वारा दूसरों को प्रेरित करता है।

१) अच्छे अगुवे धकेलते नहीं। वे अनुसरण करने के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने के द्वारा सींचते हैं। ५:१४-१९ पर विचार करें।

क) नहेम्याह ने करूणा और अपने अधिकारों को सर्मपण के द्वारा एक उदाहरण स्थापित किया (५:१४, १५)।

ख) उन्होंने बलिदान का एक उदाहरण स्थापित किया (५:१६)।

ग) उन्होंने कठिन परिश्रम का एक उदाहरण स्थापित किया (४:२३)।

२) जब उदाहरण का अनुसरण नहीं किया जाता तो अगुवे को प्रभावी अनुशासन लागू करने के लिए तैयार और सक्षम होना चाहिए।

३) लालची रईसों के मामले में नहेम्याह ने प्रबंधन के इस क्षेत्र में स्वयं को सक्षम साबित किया (५:१-१३)।

टिप्पणियाँ -

ग. एक प्रभावशाली अगुवा मजबूत व्यक्तिगत संबंध बनाने के द्वारा प्रेरित करता है।

१) नहेम्याह का अपने अगुवों के नाम का ज्ञान और वाक्यांश ''एक और भाग की मरम्मत'' की पुनरावृत्ति, (३:११, १९-२१, २४-२७, ३०), उनके कार्यकर्ताओं के प्रयासों के प्रति उनकी व्यक्तिगत जागरूकता को प्रकट करती है।

२) अगुवे से मान्यता अनुयायियों के भीतर अपनेपन और सुरक्षा की भावना पैदा करती है।

३) प्रशंसा और मान्यता प्रेरणा के आवश्यक तत्व हैं।

घ. एक प्रभावशाली अगुवा सीखता है कि आंतरिक प्रेरणा के साथ कैसे प्रेरित किया जाता है।

१) बाहरी प्रेरणा (पैसा, छुट्टी) केवल अस्थायी रूप से प्रेरित करती है।

२) आंतरिक प्रेरणा (कार्य संतुष्टि, उद्देश्य की भावना) लगातार प्रेरिता करती है।

क) वास्तव में, व्यवसाय प्रबंधन में कई अध्ययनो ने आंतरिक प्रेरणा के महान मूल्य और बाहरी प्रेरणा के सीमित मूल्य को प्रकट किया है।

ख) नहेम्याह ने २:१७ में आंतरिक प्रेरणा का उपयोग किया जब उन्होंने कार्यकर्ताओं के राष्ट्रीय गौरव की गुहार लगाई।

टिप्पणियाँ -

ङ. प्रेरणा की प्रक्रिया।

१) एक प्रभावशाली अगुवा कार्य को पूरा करने के लिए उसे वास्तविक रूप से प्रस्तुत करता है। फिर उसे कार्यवाई को बढ़ावा देना चाहिए। अंत में, उसे आशा की भावना प्रदान करनी चाहिए। यह प्रक्रिया वास्तविकता से कार्यवाई, विश्वास की ओर बढ़ती है।

२) यह दर्शाने के लिए कि नहेम्याह ने इस प्रेरणा की प्रक्रिया का उपयोग कैसे किया निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें (२:१६, १७ को संदर्भित करें)।

प्रेरणा की प्रक्रिया

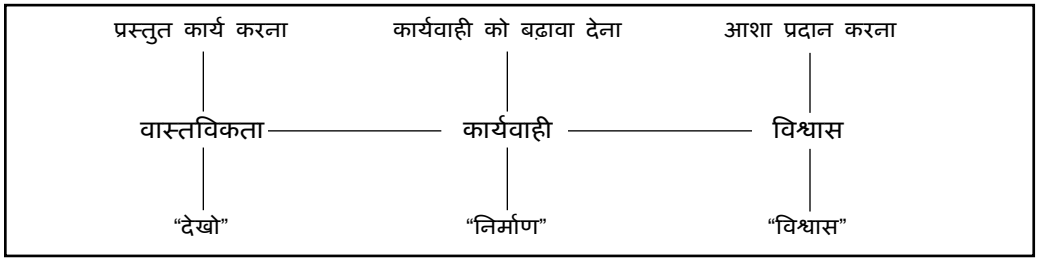

३. एक प्रभावशाली अगुवा जानता है कि विरोध को कैसे उचित रूप से हल करना है।

क. यदि एक अगुवे की निंदा नहीं होती, तो इसका अर्थ है कि वह अपना काम ठीक से नहीं कर रहा (साथ ही लूका ६:२६ पर विचार करें)।

ख. विरोध अक्सर सफलता के साथ होता है। जितनी बड़ी सफलता होगी उतना बड़ा विरोध होगा। अगुवों को अपने विरोधियों को बुद्धिमानी के साथ प्रत्युत्तर देने मे सक्षम होना चाहिए।

ग. नहेम्याह ने ६:१-८ में अपने विरोध का प्रत्युत्तर प्रभावशाली रूप से दिया।

१) उन्होंने ६:१२ में विरोध के स्त्रोत को पहचाना।

२) फिर उन्होंने ६:१३ में विरोध के उद्देश्य को पहचाना।

३) उन्होंने विरोध की कार्यवाही को अनुमति नहीं दी कि वह उन्हें या उनके कार्यकर्ताओं को विचलित करे। वे अपनी दृष्टि को विरोध के बजाय अपने लक्ष्य पर लगा कर आगे बढ़े। वे अपने नियोग पर केंद्रित रहे।

४) उन्होंने विरोध से लड़ने के लिए प्रार्थना (४:४, ५, ९) और दृढ़ता (४:६) का उपयोग किया। साथ ही उन्होंने सामान्य ज्ञान का भी इस्तेमाल किया (४:९)।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

यदि आपको लगता है कि कोई आपकी कार में सेंध लगा सकता है, तो आप प्रार्थना करें और इसे सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें। साथ ही आप दरवाजों को भी बंद रखें (सामान्य ज्ञान)।

अपना उदाहरण लिखें:

क) नहेम्याह के पास अभिमानी विश्वास नहीं था। वे प्रार्थना और कार्य के जन थे। ध्यान दें कि कैसे उन्होंने इसे पद ४:९ में कहा, ''हमने प्रार्थना की और पहरूए ठहरा दिए।''

ख) विश्वास कार्य का इंकार नहीं करता। वास्तव में यह विश्वास का एक भाग है।

घ. एक अगुवे का चरित्र जैसा की वह स्वयं से संबंधित है।

१. एक मसीही अगुवा निःस्वार्थता का पीछा करता है।

क. एक मसीही अगुवा दूसरों के विषय में चिंता के द्वारा प्रेरित होता है स्वयं के लिए नहीं। अगुवे को ''दूसरों'' की और उन्मुख होना चाहिए ''स्वयं'' की ओर नहीं। एक अगुवा दूसरों की उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करता है स्वयं की नहीं।

१) नहेम्याह ने, कार्यकर्ताओं की सूची और उनकी उपलब्धियों में, अपने ऊपर ध्यान केंद्रित नहीं किया। उन्होंने दूसरों की उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित किया।

२) एक मसीही अगुवा जितने का हकदार है उससे अधिक दोष लेने के लिए और जिसका वह हकदार है उससे कम श्रेय लेने के लिए तैयार रहता है।

टिप्पणियाँ -

ख. एक मसीही अगुवे को अपनी आँखें दूसरों पर लगाने के लिए खुद पर से अपनी आँखें हटाने में सक्षम होना चाहिए। यदि वह अपने और अपनी समस्याओं के विषय में अधिक चिंचित है, तो वह दूसरों की सहायता करने में सक्षम नहीं होगा। उसे सेवा करने के लिए स्वतंत्र (स्वयं से) होना चाहिए। उसे दूसरें के लिए करूणा महसूस करने में स्वतंत्र होना चाहिए।

१) यीशु भीड़ के लिए करूणा महसूस करने में सक्षम थे क्योंकि वह स्वयं पर से और अपनी जरूरतों पर से ध्यान हटा कर दूसरों पर और उनकी जरूरतों पर लगाने में सक्षम थे (मरकुस ६:३१-३९ पर विचार करें)।

२) साथ ही नहेम्याह ने खुद पर से अपनी आँखे हटाई और उनके लिए करूणा महसूस की जिनकी उन्होंने अगुवाई की (देखें १:४)।

२. एक मसीह अगुवा बलिदान प्रदर्शित करता है।

क. एक मसीही अगुवे को अपने लोगों को लिए बलिदान देना चाहिए। उसे उन लोगों के लिए ''अपने आप को देना चाहिए'' जिनकी वह अगुवाई कर रहा है।

१) बाइबल के अनुसार, पति, पत्नी का सिर (अगुवा) है (इफिसियों ५:२३)। एक सिर (अगुवे) के रूप में उसकी जिम्मेदारी इफिसियों ५:२५ में वर्णित है। उसे ''अपने आप को अपनी पत्नी के लिए'' देना चाहिए।

२) यदि एक अगुवा इस तरीके में ईमानदार नहीं है, तो वह अपने लोगों की अगुवाई प्रभावी रूप से करने में सक्षम नहीं होगा। यदि वह उनके लिए अपना जीवन देने के लिए तैयार नहीं है जिनकी वह अगुवाई कर रहा है, तो अनंतः वह प्रेरणा खो देगा क्योंकि अंत में वह अपने उद्देश्य की समझ खो देता है।

क) अच्छी तरह से परिभाषित उद्देश्य की मजबूत समझ के बिना, एक अगुवा होना कठिन है। उद्देश्य का उन लोगों को आशीषित करने पर केंद्रित होना आवश्यक है जिनकी अगुवाई की जा रही है।

ख) अगुवे हितों के टकराव के कारण स्वयं को बाधित होने की अनुमति नहीं दे सकते। वे स्वयं के हितों और इच्छाओं को लोगों के हितों और इच्छाओं के रास्ते में आने की अनुमति नहीं दे सकते।

ख. मसीही अगुवों को इस संबंध में बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए कि वे कैसे जीते हैं।

१) उन्हें विलासिता में रहने से इंकार करना चाहिए जब वे लोग गरीबी में रहते हों जिनकी वे अगुवाई करते हैं।

२) यह मुद्दा महत्वपूर्ण है, शायद किसी और कारण से अधिक, क्योंकि यह अगुवे की ईमादारी को साबित करता है (देखें ५:१४, १७, १८)।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

चर्चा करें कि कैसे नहेम्याह के कामों ने उनकी ईमादारी और अखंडता को दर्शाया।

३. मसीही अगुवे नम्रता दिखाते हैं।

क. मसीही अगुवों को अपने आप को नम्रता के तरीके से देखना चाहिए। वे अपने बारे में अहंकारी और ढीठ रवैया नहीं रख सकते। नम्रता का परिणाम लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने की क्षमता होना चाहिए।

१) २:१७ में, नहेम्याह ने अपने आप को लोगों साथ शामिल किया।

क) उन्होंने यह नहीं कहाः ''ये तुम्हारी समस्या है। तुम्हें यह करना चाहिए।''

ख) वह कहते हैंः ''यह हमारी समस्या है। हमें यह करना चाहिए।''

२) ४:२३ में, नहेम्याह इन शब्दों को काम में लाएं।

क) उन्होंने अपने लोगों के साथ काम किया। वे उनके साथ खेड़े हुए और साथ ही अपने हाथों को भी गंदा किया।

ख) उन्हें कठिन परिश्रम करने पर बहुत गर्व नहीं था। आम लोगों की अगुवाई करते हुए वे आम कामों में हिस्सा लेने के लिए पर्याप्त विनम्र थे।

ख. मसीही अगुवे क्रूस पर तैयार किये जाते हैं।

१) एक मसीही अगुवे को स्वयं की पहचान यीशु के साथ करनी चाहिए जो अपनी पहचान क्रूस के साथ करते हैं। केवल इसी तरीके से पुनरूत्थान की विजय एक अगुवे के जीवन और सेवकाई में पूरी हो सकती है।

२) अगुवाई का यह पहलू, किसी भी अन्य तरीके से अधिक, परमेश्वर के साथ धनिष्ठ और मजबूत संबंध के माध्यम से बनाया गया है।

३) हम ऐसा कह सकते हैं कि एक अच्छा अगुवा सुर्खियों में रहने पर अच्छा प्रदर्शन करने में सक्षम हो सकता है। हालाँकि एक महान अगुवा अच्छा प्रदर्शन करने में सक्षम होता है जब वह अकेला होता है। महान अगुवे परमेश्वर के साथ बिताए गए उनके समय के दौरान बनते हैं।

ङ. नहेम्याह से अगुवाई के चरित्र गुणों का परिशिष्ट।

टिप्पणियाँ -

१. विश्वास (४:१४, १५, २०; ६:१६)।

२. प्रार्थना (१:४-११; २:४; ४:४, ५, ९; ५:१९; ६:९,१४)।

३. संवेदनशीलता (२:१२)।

४. परमेश्वर का भय (५:९, १५)।

५. परमेश्वर पर निर्भरता (२:८, १८)।

६. जानकार (१:२; २:८, १२-१५)।

७. समझ (६:१२)।

८. क्रिया उन्मुख (२:१७)।

९. व्यावहारिक (३:२१-२३, २८-३०)।

१०. दृढ़ता (४:२१)।

११. विवेक (२:१२-१६)।

१२. अखंडता (५:९-१२,१४-१९)।

१३. तैयारी (२:६-८,११-१६)।

१४. साहस (६:११)।

१५. व्यावहारकुशल (२:५-८)।

१६. धर्मिक क्रोध (५:६)।

१७. कमजोरियों की रक्षा करता है (४:१३)।

टिप्पणियाँ -

V. निःस्वार्थता की चरित्र विशेषता।

क. निःस्वार्थता का परिचय।

१. शायद हम मसीही चरित्र की जिस सबसे निकटतम एक-शब्द परिभाषा पर आ सकते हैं वो है **''निःस्वार्थता।''**

क. निःस्वार्थता एक व्यक्ति के चरित्र का वह भाग है जो उसे दूसरों की जरूरतों और इच्छाओं को याद रखने के लिए स्वयं की जरूरतों और इच्छाओं को भूलने में सक्षम बनाता है।

ख. निःस्वार्थता वह विशेषता है जो हम में मसीह रहने की अनुमति देती है। ''क्योंकि अब मैं जीवित न रहा (निःस्वार्थता), परन्तु मसीह मुझ में जीवित है (गलातियों २:२०)।''

२. संक्षेप में, हम असीसी के फ्रांसिस के जीवन के कुछ पहलुओं पर विचार करेंगे, जो १२०० ई.पू. कलीसिया के इतिहास से चिचित है ताकि मसीही चरित्र में निःस्वार्थता के विचार को और अच्छी तरह से समझा जा सके। बेशक कलीसिया इतिहास के अगुवों के कई अच्छे उदाहरणों (जैसे कि मार्टिन लूथर, आदि) को चुना जा सकता था।

चर्चा विषय

असीसी के फ्रांसिस ने एक निःस्वार्थता का जीवन जिया। उनकी सबसे बड़ी इच्छा मसीह के जीवन का अनुसरण करते हुए स्वयं से स्वतंत्र होना थी। उनका जीवन पुनर्जीवित जीवन था क्योंकि उन्होंने उस आत्मा को अपनाया जो मसीह को क्रूस पर ले गई (मत्ती १६:२५)। उन्होंने निःस्वार्थता की आत्मा को अपनाया। आप किन तरीकों से निःस्वार्थता का अनुसरण कर सकते हैं?

ख. स्वतंत्रता और निःस्वार्थता।

१. जो चीज़ स्वार्थीपन के लिए गुलामी है वही निःस्वार्थता के लिए स्वतंत्रता है। स्वार्थीपन आपको स्वयं का गुलाम बनाता है। निःस्वार्थता आपको स्वयं से स्वतंत्र करती है और परमेश्वर और दूसरों की सेवा के लिए स्वतंत्र करती है।

२. असीसी के फ्रंसिस ने अपनी निःस्वार्थता के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त की।

क) एक बार,वह एक चिड़िया की स्वतंत्रता पर विचार कर रहे थे। वह उसका पीछा करते हुए एक घर की छत पर गए। वे धीरे-धीरे छत के किनारे की ओर गए जहाँ वह चिड़िया बैठी थी। तब वह चिड़िया उड़ गई। चिड़िया स्वतंत्र थी।

टिप्पणियाँ -

ख) फ्रांसिस भी उड़ना चाहते थे। वह स्वतंत्र होना चाहते थे। वे समझ गए कि उड़ने के लिए उन्हें बहुत हल्का होना चाहिए। उन्हें स्वयं को उस भारी बोझ से स्वतंत्र करना था जिसे लेकर वे चल रहे थे। उन्हें स्वयं के लिए मरना था।

ग) स्वतंत्रता के इस विवरण के संबंध में मत्ती ११:२८-३० के अर्थ पर विचार करें।

३. स्वतंत्रता ने मसीह को क्रूस पर भेज दिया। निःस्वार्थता में स्वतत्रंता है और ''जहाँ प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है (२ कुरिन्थियों ३:१७)।''

चर्चा विषय

गलातियों और १ पतरस २:१६ के महत्व पर चर्चा करें क्योंकि वे स्वतंत्रता और निःस्वार्थता के इन विचारों से संबंधित हैं।

ग. आनंद और निःस्वार्थता।

१. आनंद निःस्वार्थता का परिणाम है। तनाव स्वार्थीपन का परिणाम है।

क. फ्रांसिस ने अपने अनुयायियों से कहा कि यह उनकी स्वयं की जिम्मेदारी है कि वे आनंद से भरे रहें और दूसरों के हृदयों को ऊँचा उठाएँ।

ख. फ्रांसिस आनंद के जन थे क्योंकि उनकी निःस्वार्थता वास्तविक थी। उन्होंने स्वयं के लिए मरने के लिए अपने आप पर ध्यान केंद्रित नहीं किया। वे अपनी इच्छा से मरे क्योंकि वे मसीह के समान होना चाहते थे। इस प्रकार, उनका दुःख और अनुशासन आनंद में किया गया था।

२. वास्तविक निःस्वार्थता आनंदित आत्मा के द्वारा सिद्ध होती है।

क. फ्रांसिस को उपवास करना पसंद था। यह उनके लिए एक बोझ नहीं था। उन्होंने इसका आनंद इसलिये नहीं लिया क्योंकि वे एक पीड़ा सुखभोगी थे (वह व्यक्ति जो स्वयं को दंड देने का आनंद लेता है)। उन्होंने इसका आनंद इसलिये लिया क्योंकि उपवास का उनका उद्देश्य गंभीर था।

ख. एक धार्मिक या स्वार्थी आत्मा तनाव की ओर ले जाती है। एक गंभीर या निःस्वार्थ आत्मा आनंद की ओर ले जाती है।

चर्चा विषय

चर्चा करें कि निम्नलिखित खंडों में यह किस प्रकार सत्य हैः मत्ती १३:४४; २ कुरिन्थियों ८:२: फिलिप्पियों २:१७,१८।

टिप्पणियाँ -

टिप्पणी: निःस्वार्थता से संबंधित फ्रांसिस के उद्धरण निम्नखित हैं।

घ. असीसी के फ्रांसिस के उद्धरण।

१. "सारे अनुग्रह और कलीसिया को दिए गए पवित्र आत्मा के वरदानों से ऊपर, स्वयं पर जय पाना, और स्वेच्छा से मसीह के प्रेम के लिए दर्द और अपमान और शर्म और अभिलाषाओं को सहन करना है (देखें लूका ६:२२, २३)।"[२]

२. बुद्धि, सरलता, गरीबी, नम्रता, प्रेम और आज्ञाकारिता जैसे गुणों का उल्लेख करते हुए फ्रांसिस कहते हैंः ''ये प्रभु के परम पवित्र गुण हैं जिनका आप अनुसरण करते हैं। और आप में से कोई भी ऐसा नहीं है कि हम स्वयं के लिए मरे बिना इनका अभ्यास कर सकें।"[३]

VI. अनुशासन।

क. अनुशासन का परिचय।

१. मसीही चरित्र का अध्ययन करने के लिए, हमें अनुशासन के विषय पर भी विचार करना चाहिए। एक मसीही जीवन अनुशासित जीवन होना चाहिए। यह अनुशासन मसीह के लिए प्रेम के द्वारा प्रेरित होना चाहिए।

२. चेले शब्द की उत्पत्ति उसी मूल शब्द से हुई है जो अनुशासन शब्द का निर्माण करता है। एक मसीही चेला वह होता है जो यीशु का अनुसरण करता है और अपने जीवन को उनके द्वारा दिए गए नमूने के द्वारा अनुशासित करता है।

३. जॉन वेस्ली, मेथोडिस आन्दोलन के संसथापक, एक अनुशासन प्रिय जन थे। वे परमेश्वर के साथ अपनी चाल में बहुत सुव्यवस्थित थे (जहाँ से ''मेथोडिस'' नाम आया है)।

क. हालाँकि, वे एक व्यवस्थावादी नहीं थे। उनकी मसीहियत कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो उन्होंने अपने आप पर थोपी थी।

ख. वह एक सच्चे धर्मनिष्ठ मसीही थे। उनकी मसीहियत (और इसके साथ अनुशासन) कुछ ऐसा था जो उन्होंने स्वेच्छा और आनंद से किया।

ग. उनका अनुशासन, किसी भी और चीज से अधिक, अतिप्रवाहित ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करने और संगठित करने का एक तरीका, प्रतिबद्धता और वह इच्छा थी जो उनके पास मसीह के लिए थी।

४. हम वेस्ली के जीवन का उपयोग संक्षेप में इसका वर्णन करने के लिए करेंगे कि कैसे अनुशासन मसीही चरित्र एक एक महत्वपूर्ण पहलू है। कलीसिया इतिहास से बहुत से अच्छे उदाहरण (जैसे कि जॉन केलविन) को चुना जा सकते हैं।

टिप्पणियाँ -

ख. पवित्र समूह

१. वेस्ली के जीवन के शुरूआती दौर में, वे एक समूह की अगुवाई करते थे जिसका नाम "पवित्र समूह"। इस क्लब ने एक साथ निश्चित अनुशासनों का अभ्यास किया।

क. वे प्रत्येक सप्ताह में दो बार उपवास करते थे।

ख. वे प्रतिदिन प्रातः ५:०० बजे से ९:०० बजे तक स्तुति, प्रार्थना और बाइबल अध्ययन करते थे।

ग. वे प्रतिदिन शाम ६:०० बजे से ७:०० बजे तक गरीबों के लिए प्रार्थना करते थे।

घ. वे हर सप्ताह में ५ रातों तक शाम ७:०० बजे से लेकर ९:०० बजे तक एक साथ भक्ति और अधार्मिक पुस्तकें पढ़ते थे।

२. "पवित्र समूह" के सदस्य बहुत अनुशासित थे। हालाँकि वे केवल अपने जीवन में अनुशासित होने के लिए ही अनुशासित नहीं थे। उनका अनुशासन परमेश्वर के प्रति उनके प्रेम और परमेश्वर को जानने की उनकी ज्वलंत इच्छा के द्वारा प्रेरित था।

ग. कानून नहीं स्वतंत्रता।

१. प्रारम्भिक मेथोडिसवाद के अनुशासन को कुछ लोगों द्वारा कानून की सीमा के रूप में देखा जा सकता है।

क. हालाँकि, मेथोडिस आन्दोलन मनुष्य की अनुशासन योग्यता पर आधारित नहीं थी, बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा और परमेश्वर के साथ नजदीकी से संगति करने की इच्छा पर आधारित था।

१) पवित्रता की इच्छा के कारण अनुशासन का अभ्यास किया गया। यह एक अंत नहीं था। यह केवल एक अंत का माध्यम था, जो कि परमेश्वर को और पूर्णता से जानना था।

२) अनुशास का ध्यान केंद्र लोगों को कुछ करने के लिए बाध्य करने पर नहीं था। यह लोगों को मसीह के साथ अधिक नियमित और फलवंत संबंध में आमंत्रित करने पर था।

ख. जबरदस्ती का अनुशासन कानूनवाद की ओर ले जा सकता। हालाँकि, वह अनुशासन जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा और व्यक्ति की स्वेच्छा का परिणाम है, स्वतंत्रता और जीवन की ओर ले जाएगा।

टिप्पणियाँ -

२. अनुशासन उद्धार का कारण नहीं है। यह एक प्रभाव है।

क. यह परमेश्वर के प्रति वह प्रत्युत्तर है जो कहता है, ''मैं आपको अपना सम्पूर्ण जीवन देना चाहता हूँ क्योंकि आपने मुझे अपना संपूर्ण जीवन दिया।'' अनुशासन एक उपकरण है जो ''अपने उद्धार पर काम करने'' के लिए उपयोग किया जा सकता है और किया जाना चाहिए (फिलिप्पियों २:१२)।

ख. इस प्रकार, अनुशासन उद्धार से अधिक शुद्धिकरण से संबंधित है। जब हम हमारे शुद्धिकरण के लिए पवित्र आत्मा के काम के अधीन होते हैं, हम जीवन के सभी क्षेत्रों में अधिक और अधिक अनुशासित हो जाएंगे।

ग. मसीही चरित्र में अनुशासन का ध्यान केंद्र पवित्रता और परमेश्वर के साथ संबंध पर होना चाहिए।

१) एक मसीही को अपने शरीर को नियंत्रित रखने में सक्षम होने के लिए अनुशासित होना चाहिए (१ कुरिन्थियों ६:१२-२०)।

२) यह अनुशासन ''शारीरिक अनुशासन'' से अधिक होना चाहिए। इसे भक्तिपूर्णता के संदर्भ में किया जाना चाहिए (१ तीमु. ४:७, ८)।

३) किसी भी और चीज से अधिक, मसीही चरित्र जिसमें अनुशासन शामिल होता है को परमेश्वर के साथ समय बीताने की ओर संकेत करना चाहिए। हमें अपने मनों को परमेश्वर के साथ नियमित रूप से संगति में होने के लिए अनुशासित करना चाहिए। हमें दैनिक समय सारणी के अनुसार योजना बनाने और जीने के लिए स्वयं को अनुशासित करना चाहिए जो परमेश्वर के साथ समय बिताने को प्राथमिकता देगा।

चर्चा विषय

चर्चा करें कि कैसे प्रारंभिक मसीहियों ने अपने चरित्र में अनुशासन प्रकट किया प्रेरितों २:४२ के निहितार्थों और चुनौतियों पर चर्चा करें।

मसीही चरित्र: अंतिम टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ -

[1]एफ.बी. मेयर, मोसेस (मूसा) (फोर्ट वाशिंगटन, पी.ए: क्रिस्चियन लिटरेचर क्रूसेड, १९७८), पृष्ठ १०१।

[2]डी.के. चेस्टरटन, सेंट फ्रांसिस ऑफ़ असीसी (गार्डन सिटी, एन.वाई.: इमेज बुक्स, १९५७)।

[3]इबिद।

मसीही चरित्र

टिप्पणियाँ -